

①

॥ श्रीगुरु ॥

॥ श्रीरामविजयं यं पंक्तिमध्यायप्रोत्तमः ॥



Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

२
श्रीराम ॥
॥ ११ ॥

॥ श्रीमहागणाधिपतये नमः ॥ जो जगद्गुरु बादिनिर्विकार ॥ जो ब्रह्मादिदेवांचे माहुरा ॥ जो आदिमायचा निज
वर ॥ तो रघुविरर विकुकि ॥ १ ॥ अनंत ब्रह्माडचा कर्ता ॥ जो प्रवचकाकाचा शास्ता ॥ तो मरथाय जनतला ॥
नंदिया मिराहिला ॥ २ ॥ अयोध्येचे जनसंकु ॥ जो दशपथेराजदक ॥ सैराउतरले तुंबक ॥ नंदिया मवेष्टुनि
यां ॥ ३ ॥ अहोदशपथेवान्नरदक ॥ बाहलरकेटिरिससक ॥ उपल्लकेटिगेकांशुक ॥ उलरले येया जवका
शे ॥ ४ ॥ याकीर विश्वधन्याचा सुत ॥ विमिषणापण्यपडित ॥ त्याचि नसुरसेना अजुल ॥ रघुनाथ मकउत्तर ॥ विजय ॥
ले ॥ ५ ॥ अहोदशहोणिवाजेने ॥ विमिषणाचि ॥ जो तो जरे ॥ त्याहुनि अयोध्येचि परिकरे ॥ अहोरात्र वा ॥ ११ ॥
जति ॥ ६ ॥ शत्रुघ्ने आणिसुमंत ॥ हे मां वरं शिबि ॥ उभे करिते जाले तेथें ॥ लक्षानुलक्ष तेका किं ॥ ७ ॥
त्यारि रत्नरजडितस्तत्र ॥ वरिजडितकवससुप्रभ ॥ त्यातें जे करुनि नम ॥ उबळले ते का किं ॥ ८ ॥ सुग्रि
व विमिषणादिनुपवर ॥ अणि कृहिकपिराजधोरथोर ॥ त्याशिबिर यहिसमस्त ॥ राहाले जाले तेथे वा ॥ ९ ॥
कुठ्ठचळमेतथोर ॥ तेसें मुख्य श्रीरामाचे शिबिर ॥ मालाबंधु शिरघुविर ॥ तेथें राहाला जाहाला ॥ १० ॥

(५४)

अंतरयहिरितासति॥ उन्निकंमालाविभ्रतिकिर्ति॥ वौघिजावातेयेंराहाति॥ अनंदचिलिनसमाये॥ १७॥
 आलाबैकोनिरधुविर॥ पावलाजनकरावभ्यसुर॥ संगेदंकारनपार॥ वाद्येगजेरेंयेतसे॥ १८॥ छंपन्न
 देशिंचेनपति॥ पावलेतेकंशियगति॥ सत्यदिपिनवरवंडिवसति॥ धावतिकरभारयेउनियां॥ १९॥ भावि
 लस्यमयक्रुषेश्वर॥ नानासाधनेननेयोर॥ योगयागदुकुनिरधुविर॥ पाहलिसर्वबावडिने॥ २०॥ सत्यपु
 स्थगिरिकहरिं॥ नानाकियगुढविवरिं॥ दृष्ट्याप्रमदिगायुवरि॥ आसनेउपचिंचालति॥ २१॥ शमदमा
 दिकसाधन॥ अष्टांगयोगदेहदंडण॥ नानाहाटयोगतत्त्वरण॥ सांठुनिवेगेधावलि॥ २२॥ तितुक्का
 सहिरधुनंदन॥ उदोनिदेतिबालिंगना॥ समस्तासहिरधुनंदन॥ वस्त्रमंडपिवैसले॥ २३॥ देहिंववि
 देहिरधुविर॥ तोजगन्मातेचाभितामिथुळेभर॥ त्याशिमंगळस्नानरधुविर॥ करविलाजालातेका
 किं॥ २४॥ असोनस्नानरनुपवर॥ वशिष्टादिकक्रुषेश्वर॥ त्याशिस्नानरधुविर॥ करविलाजावातेकाकिं॥ २५॥
 लक्षानुलक्षसुवर्णकढया॥ उष्णादेकंताउनियां॥ सुगंधतेलेलाउनियां॥ मंगळस्नानेकरविलि॥ २६॥

(3)
॥ श्रीराम ॥
११७५॥

सर्वेशिवस्त्रं बळंकार ॥ नानापरिचेउपचार ॥ देताजाला छुपासागर ॥ समसमानसर्वो तें ॥ ११७॥ वशिष्टना
हालचसत्वर ॥ अमोक्षवस्त्रं बळंकार ॥ नानापरिचेउपचार ॥ देताजाला आदरे ॥ ११८॥ मणिमयपादुका
पुन ॥ गुत्तपुटे वीरधुनंदन ॥ त्यावशिष्टे पाईद्यालुन ॥ येउनि वैसला स्वस्थाना ॥ ११९॥ त्रयभगिनिसमवेत
शिवा ॥ अंतरग्रहिं जगन्माता ॥ स्नानकरनिथा समस्ता ॥ लेईया वस्त्रं भुषणें ॥ १२०॥ सकळजयोद्यावशि
जन ॥ नारिबस्नानंदे करन ॥ सर्वेशिगेन वस सममान ॥ जनकजामा ले दिधला ॥ १२१॥ मग बंधु सहितरधु
नंदन ॥ करिता जाला मंगळस्नान ॥ तेलसुगंधला पुन ॥ तटाउकलिन्या मस्तकिंच्या ॥ १२२॥ चौदावें पर्यंत ॥ ॥ विजय ॥
भरथाकारणें धरिलें दृढ ॥ तेजाजिविसर्जिलें रस ॥ शिवावत्सर्गें ते धवा ॥ १२३॥ अग्र्यंगजालिया समया ॥ ॥ १२४॥
सुमंतें वस्त्रं बळंकार ॥ भरथें जाणुनि सत्वर ॥ रघोला मारिस मर्पिन्सा ॥ १२५॥ जोलावण्या मूलसागर ॥ तो
लेईया वस्त्रं बळंकार ॥ सकळ करिति जयजयकार ॥ हर्षबं वरकें देलें ॥ १२६॥ मगरधुनाच आजेने ॥ सौमि
त्र भरथशत्रुघ्न ॥ चौथा सुमंत प्रधान ॥ मंगळस्नान करिते जाले ॥ १२७॥ संध्यादिनि लेई कर्मसारिलें ॥ १२८॥

(३५)

लोपाकनिष्पतिसिध्यजालि॥ सककन्दपद्मपिप्लित्वाकिं॥ भोजनशिबैसति॥ ३१॥ विभिषणसुग्रिववायुनन्दन॥
 नकनिकशरभगंधमादन॥ बंधुसहितरघुनन्दन॥ भोजनशिबैसले॥ ३२॥ मणिमयलाटेनेजागकि॥ स्वचित्तज
 उणितयात्किं॥ उदकपात्रेभरनिवेविठि॥ समसमानसवोशि॥ ३३॥ रजतचकाचाभागवेवळ॥ तैसावडिका
 जालनिर्मळ॥ पंचभक्षपरमान्नसोजवळ॥ सानिपत्रशारवात्रोमिति॥ ३४॥ मधुदधिदुग्धघृत॥ शक्तिरापंच्याभुतेवादि
 लिंबहुत॥ जापंतिसवैसलारघुनाथ॥ न्युन्यत्तथैकहिनेस॥ ३५॥ लेखनेवर्णाविंसमस्त॥ तीरकांवाढवावाग्रंथ॥
 सककजिवांसहितरघुनाथ॥ लक्ष्मजालेभोजनि॥ ३६॥ हस्तप्रद्विकुनिनिर्मळ॥ त्रयोदशगुणिलंबुत॥ सर्वोत्तम
 तत्तमाकनिक॥ घेताजालालेककिं॥ ३७॥ रामकेलिमन्त्रावातात॥ तिनदिवसरहितलातेथ॥ वशिष्टंकाठिकादि
 व्यमुहूर्त॥ अयोध्याप्रवेशकरावया॥ ३८॥ पुष्पाक्रियोगबहुसुमद्र॥ रामचंद्राशिदशमचंद्र॥ त्याचमुहूर्तेगुणस्पमु
 द्र॥ उठताजालालेककिं॥ ३९॥ लागलावाद्यांचागजर॥ भेरिदेकिन्नाचोदासहस्त्र॥ विभिषणाचिवाधेंसमय॥
 वज्रोलागतिलेककिं॥ ४०॥ विभिषणसुग्रिवादिनूपति॥ वैसलेलेकंदिव्यरथि॥ वाद्यगजरारवालक्षिति॥ ४१॥

(5)

॥ श्रीसाम
॥ ३॥

उडमकुड लागलिलेघवां ॥ ४१ ॥ दिव्यराधिरधुनाय ॥ वैसलातेकांशिलेसहिवा ॥ शत्रुघ्नबाणिमरथा ॥ चामरेवंरि
 ठाळिति ॥ ४२ ॥ सहस्राचिसहस्रवेत्रधार ॥ पुढेंमार्गकरितिसत्वर ॥ नगराजवकिरधुकिर ॥ पावताजाललेका
 णि ॥ ४३ ॥ सत्पुण्यांतलिलिभ्रष्ट ॥ अयोध्यापुरिपरमवीरष्ट ॥ सकळविद्येमजिस्सुमत ॥ अध्यात्मनिद्याजै
 शिको ॥ ४४ ॥ तेअयोध्येचिस्वनातक्षणि ॥ कपिबासुराहातिनयनि ॥ देवराजपुरिउपमेउणि ॥ अयोध्येझिलुळि
 तां ॥ ४५ ॥ अयोध्येमेवतंतुद्यान ॥ उपमेत्रिउणेनदनवन ॥ दृष्टसदांफळपुर्ण ॥ गेलेंगगनमेरित ॥ ४६ ॥ सूर्यकिर्य ॥ विजय ॥
 नहिस्तिनयनि ॥ अशिसंधनघायापडलि ॥ कस्तुरितुगसर्वकाळि ॥ किडाकरितिवनाल ॥ ४७ ॥ रांवेसाळया ॥ ३ ॥
 मयुर ॥ आतकवरकंठावेतिस्तिर ॥ गानापद्दिनिरेवरा ॥ रामनामंगजैति ॥ ४८ ॥ स्फटिकनिबंधसरोवरे ॥ माजि
 पिलोसकंसुवासकरें ॥ राजहौंसमानंदेधोरें ॥ किडाकरितसयेस्थानि ॥ ४९ ॥ अयोध्येमेवलेदुर्गपुर्ण ॥ उंचसते
 जजलिगहन ॥ नागपर्णाकृतिरखचिलजाण ॥ चर्यावसत्यविलसति ॥ ५० ॥ किंवकिनेजोडलेगमस्ति ॥ दुर्गव
 रिहृष्टविराजति ॥ तेसदांफळनिराकमेदिलि ॥ कपिपाहातितटस्त ॥ ५१ ॥ जैसेकनकाद्रिचेसुत ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

तैसहुडेविराजल॥ माहादोरलखलखित॥ तेजबगणिलनगणवे॥ ५२॥ अरवतिवरिदेवपाळा॥ बैसेनित्यादोर
 जाईल॥ चैविसयोजनेविशाळा॥ वीतपोतबयोध्या॥ ५३॥ अयेथेचाबाजारबहुल॥ मृगमदसुवाससककृत॥
 मठमंडपचौबोरेंतेथे॥ रत्नजडिलरचियेले॥ ५४॥ हिरियाच्यामजकसासककृति॥ पाचुचेरांवेशककृति॥ व
 रिमुक्तांचेहांसनाचति॥ घरोघरिनवलहे॥ ५५॥ विणेतकमदंगवाजवन॥ लेपेककृतिसुस्वरगायन॥ रत्नपुत
 केककृतिलिन्त्य॥ हस्तसंकेतदाउनियां॥ ५६॥ शतरवणिगेपुरेविशाळा॥ स्वणोरवणिपुलक्याजिर्मका॥ अनुमा
 वतागतांजिनिका॥ फिरतीफिरतनृत्यककृति॥ ५७॥ अवतारलेपेरत्नजडिल॥ गोपुरांवरिसतेजसककृत॥ कंक
 सभगनाशिहिणवित॥ लह्यावाधचहुकडे॥ ५८॥ राज्यांनैलसुप्रभा॥ सककृतिहिरियावेस्तंज॥ निळांचिउ
 धाळिस्वयंज॥ फिरतीफिरतनृत्यककृति॥ ५९॥ सुवर्णरतुक्कटंलंबायमान॥ वरिपाचुवेदाटसधन॥ माणिकां
 च्याकिलचासंपुर्ण॥ तेजेकरनिलखलखित॥ ६०॥ अष्टमरिधिघरोघरि॥ नवनिधितिलिद्वारि॥ समाननु
 धिनरनरि॥ पुण्यराहाटिवर्तति॥ ६१॥ मृत्युरोगहरिद्रुःख॥ दुर्बुद्धिजवर्धणपापशोका॥ तत्करकापट्यपि

(५४)

माहाद्वारिङ्गणेशसरस्वति॥ त्यांचि पुजा करुनि रघुपति॥ आंत प्रवेशाला करित गति॥ सकळ नृपां सहित
 ॥७३॥ जैसा आनंद समुद्रि मिका ला॥ नंदन वनि मर संचरता॥ किंच तुम रवाचे हृदई निघाला॥ वेद जैसा
 षडंगें ॥७४॥ किं दृत्रा सुरमर्दुना॥ मंदिरि प्रवेशे शि विरमणा॥ तैसा सकळा सहित रघुनंदन॥ अयोध्ये मा
 जि प्रवेशाला ॥७५॥ देव अंबरि पाहली॥ असंख्य दारु लेख पति॥ किरट शि किरट आदकति॥ रत्ने विशु
 रति चहुं कडे ॥७६॥ ते अयोध्येच्या समस्त नरि॥ साद्वर्गा गना बलिसुंदरि॥ रत्न दिपये उनि करिं॥ वोवाकु
 आन्यारामाशि ॥७७॥ लक्ष्मि लक्ष्मि नगर ललना॥ अंग तिसच वाचि नमय लोचना॥ जयला भक्तु शिवाचर
 णा॥ जवळि अरवंड जसेला ॥७८॥ त्या कडे पाहुनि रघुनाथ॥ सुमंत शि मर संकेत दावित॥ तो त्या शिस मज
 ला अर्थ॥ जे कां हृदय रामाचे ॥७९॥ वस्त्रें अंककार बाणेनि॥ ताका कंगोर विन्नाक मिनि॥ तो नगर
 लोक धांवा नि ते द्वाणि॥ मुड पथ मणि जाहुलि ॥८०॥ तया शि वे प्रधारि मारि ति॥ मंदिरि पाहोनि रघुना
 था॥ ताका कपर लेख लेखुत॥ ह्मणे जन समस्त यउंथा ॥८१॥ आज होतं चि जाणा॥ जवळि आले सकळ जन॥

(5)

॥ श्रीराम ॥
॥ १४ ॥

जनिः शंकरः ॥ अयोध्ये माजिनसेवि ॥ १४२ ॥ चत्रासयेकदंडप्रशिष्यः ॥ सुमनासहरयुक्तिमुबध ॥ सारिखेकतो
 मारमुबध ॥ सुरतयुध्यैजणिजे ॥ १४३ ॥ घरानयेनिकुपिभिसु ॥ तस्मिं लोकं स होयशोक ॥ प्रजांससुखसा
 रादेख ॥ देलिततोचिधेइजे ॥ १४४ ॥ त्रिकाळगईदुमति ॥ ईदिलेंदुग्धलिनुकेंदेति ॥ यथाकाकिमेववर्षति ॥
 समयोचितपाहुनिया ॥ १४५ ॥ घरोघरिंवेदाध्यायेन ॥ व्यापिममांससारव्यपूर्ण ॥ पातांजळवेदानव्याकर्ण ॥
 हेचचर्चाहोतसे ॥ १४६ ॥ टाकमदंगउपांगेशितेथ ॥ किंनकरितिप्रेमकमल ॥ रागजपरागमार्यासहिल ॥ साम
 गायनयेककरिति ॥ १४७ ॥ धर्मशाकामंडपशाकविशका ॥ किरियांचिलिंगेसोजवळ ॥ नारकमाणिकाचेनिर्मळ ॥
 गणेशमुर्तिप्रगष्टगिति ॥ १४८ ॥ लाष्यकाळकशकवहुन ॥ येककरितितांडवनस ॥ विद्युआयध्वजलेथ ॥ देउका
 वरिउभारिले ॥ १४९ ॥ चंदनाचेसडेघाळेनि ॥ वाटाशिंपेन्याकुंकुमेकतनि ॥ रधधदशाकोणालागेनि ॥ अयो
 ध्येमाजिनसेवि ॥ १५० ॥ नानालिथ्याचिकारंजिबहुत ॥ घरोघरिंतेउसकल ॥ निकियांचेमयोरथावत ॥ विदेवि
 हिलवलाहे ॥ १५१ ॥ आकाकाकिपाहासांमंदिर ॥ येकाहुनियेकसुंदर ॥ ग्रहप्रतिगैपुरे ॥ चित्रविचित्रशोमिति ॥ १५२ ॥

॥ विजय ॥
॥ १४ ॥

श्रीराम॥
॥५॥

(6)

पाहोनियां श्रीरामवदन॥ वरणिमिठयाधालिति॥ ८२॥ तलुनियां रघुनाथ॥ वरिटाकिति बसता॥ ये व्रति
बलो न तत्वता॥ मुखवसनितुतरति॥ ८३॥ ये कृष्णतितुजवरन॥ राघवजावेवोवाकुन॥ ये कृष्णति
रुवदन॥ पुन्हाद्रिष्टिपेडना॥ ८४॥ दिव्यसुमनाचे संभार॥ वत्तनिवर्षतिसुरवर॥ असे जगद्वरघुवि
रा॥ निजमंदिरिं प्रवेशला॥ ८५॥ जउनियां जंतरयहात॥ पुष्पांजुकि देवांशि समर्पित॥ राजयाच्या
सेनासमस्त॥ अयोध्ये प्रहरिउतरल्या॥ ८६॥ अष्टादशपद्मवान्नरा॥ उतरले लंकेंचे वसुनरा॥ तिलु
क्याशिवाहरउपचार॥ सुमंतशत्रुघ्नकरितिलु॥ ८७॥ विमिषणसुप्रिवराजे सकळि॥ ते सदां बस
तिरामाजवळि॥ वशिष्टसामग्रिशिष्यकैलि॥ राजप्रहरिते घवां॥ ८८॥ श्वेलछत्रेश्वेतवामरे॥ श्वेल
गजश्वेततुरंगथोरा॥ चलुः समुद्रिंचे निरा॥ सप्तपद्मवपचमंतिका॥ ८९॥ सप्तामंडपदे दिप्यमान॥ ते
थें मंगिलें दिव्यसिंकासन॥ मिकाले सकळदिजजन॥ आणितु पतिसर्वहि॥ ९०॥ वशिष्टहोणेरजि
वनयना॥ जकटगान्नाराजिवनयना॥ जगद्व्याजानंदसदन॥ राजज्जातां अंगिकरिं॥ ९१॥ ०

॥विजय॥
॥५॥

(6A)

मरथसप्रेमबोले ॥ चतुर्दशवसेपंतपकेले ॥ लेआजिदिश्रिकाके ॥ सुफळजालेपहिजे ॥ १२ ॥ सिंकासनि
 बैसावेबापण ॥ मगअस्यभांडारेफोडुन ॥ द्रव्ययाचकांदेउन ॥ सुखिकेलेसर्वहि ॥ १३ ॥ मगवशिष्टेहति
 धसन ॥ मंडपाशिवाणिलारघुनंदन ॥ शिलेसहितवसउन ॥ अभिषेककेलावेदमंत्रे ॥ १४ ॥ घनःशामपु
 णरघुविरा ॥ तसकांचनवर्णपितांबर ॥ लेवविलेदिव्यउकंकार ॥ मुगुटकुंडलेकौस्तुभादि ॥ १५ ॥ ज्यानकि
 सहवर्तमान ॥ सिंकासनिबैसलारघुनंदन ॥ सकळपतियेउन ॥ कपाळिबद्धतालाविति ॥ १६ ॥ सुसु
 दुर्तवेकासाधुनिसत्वर ॥ वरिउभारिलेदिव्य ॥ तसकळवाद्याचागजर ॥ होतजालालेकाकि ॥ १७ ॥
 जाल्गायकचिजयजयकार ॥ सुमनेवर्षतसुरें ॥ सत्करायनिकरभार ॥ राघवापुढंसमर्पिले ॥ १८ ॥
 सवेनुपतिकरनिनमन ॥ उभेठाकृतिकरजेडुन ॥ मरथेभांडारेफोडुन ॥ याचकजनसुखिकेले ॥ १९ ॥ उदा
 रघिररघुविरा ॥ त्याचाबंधुमरथविरा ॥ मोटाबाधोनिजपार ॥ द्रव्यन्यासणेयाचका ॥ २० ॥ पुरेपुरेहेचमा
 त ॥ याचकबोलतिसमस्त ॥ हयगजरनरथा ॥ दिधलेबहुलयाचका ॥ २१ ॥ गोदानेमुदानेजपार ॥ जेजेवे

॥ श्रीराम ॥ द्विलिलेसाचार ॥ तिलुकेदेउनिदिजवर ॥ सुरिकेलेतेकाकि ॥ २ ॥ नैसाषोडशदिवसपर्यंत ॥ सोहकाहोत
॥ ६ ॥ सेजसुत ॥ क्वापात्रेयेउनिवगणित ॥ विद्यादावितिरामापुटे ॥ ३ ॥ लक्ष्मणभाणिमरथ ॥ शत्रुघ्नभाणिसु
मंत ॥ यवराज्यत्याशिदेत ॥ अरिधुनाथनिजघुपे ॥ ४ ॥ वस्त्रेषुषणेदेउना ॥ चौथेकेलेमुरव्यप्रधान ॥ लुमचा
५ ॥ अनुमतेकरन ॥ राउमवालविनरामप्रणे ॥ ५ ॥ नसेदिवजनेनिर्मुन ॥ सककरायंशिदिधेलेभोजन ॥
वस्त्रेअकंकारिसंपुर्ण ॥ शैव्यासहितसुसिकेरे ॥ ६ ॥ श्रीरामचिआज्ञाधेति ॥ सेनेसहितसककनपीति ॥ ७ ॥ विजय
स्वदेशाशितेवजाति ॥ गुणवर्णितराधवचे ॥ ८ ॥ सुप्रवभाणिविनिषणास ॥ रामेराहाविलेयेकमास ॥ ९ ॥
नित्यभोजनपंकिस ॥ नानाविलाससोहका ॥ १० ॥ तिकुसनिवैसतारधुनाथ ॥ बंधुभोवतेआनंदम
रित ॥ भक्तिरसेशत्रुघ्नमरथ ॥ आमरेवरिवारिति ॥ ११ ॥ तेंगवाक्षदारेतेसमई ॥ अवलेकितिजालिकेकई ॥
लणेत्रिभुवनशोधितहि ॥ अमगिनिहंमरथानेसा ॥ १२ ॥ चौदावतषेभिकेरि ॥ जाउनिवैसतारिवनांत
रि ॥ शेवरिबंधुचंदास्यंतकरि ॥ चामरेवरिवारितो ॥ १३ ॥ मासेंपुर्वयापफकाशिआले ॥ जेभरथाविमाताजान्ये ॥

वशिष्टाशिबोलाउनितेवेके॥कैकैसांगेयेकांति॥१२॥अपणेमाक्षियेपोटिंमरय॥दिरिद्रिजन्मलायधार्य॥
 बधुचंदस्यत्वकरित॥मजदुस्ववाटतसे॥१३॥मगअणेअहसुत॥असुनितरिरोहंनिवांत॥अशिला
 राजाद्वारय॥वनशिरधुनाथघाडिला॥१४॥सचिदानंदब्रह्मपुर्ण॥तोहाजवतंलारधुनंदन॥मुखे
 हलुजज्ञान॥अयापिकांठिककेना॥१५॥जेब्रह्मादिदेवतिथ्यायमुर्ति॥हृदईध्यायअपर्णापति॥हृद
 यसंबंकिंतबहालि॥सनकादिकजयातें॥१६॥पुण्यापुनपरधुनंदन॥त्याचेमृजनिताविमन॥आपु
 लियुक्तिठेविसाकोन॥नसतेंकवनबोडुनके॥१७॥तुजप्रतिसांगवेज्ञान॥जैसेकाननिकेलेंदन॥
 किलसुणनडुन॥कर्पूरामाजिघालला॥१८॥पुष्पनदितपलांडुगवला॥परितोयुणनसोडिबापु
 ला॥निसदुग्धवायसधुतला॥परिछुछावणंनवजाये॥१९॥शंकरेचेंअकेकेलें॥माजिनिंवविजपे
 रिलें॥परिशोवटिकडुचयेतिफळे॥व्यर्थगलेकष्टसर्व॥२०॥खापरशिपरिसयांसतां॥सुवर्णनके
 पितसत॥किंदुघामाजिहूरकशिजवितं॥मदनकृतिक्लमांति॥२१॥तैसेंतुजप्रतिजेजेशिकविलें॥

(8)

॥ श्रीराम ॥
॥ ७७ ॥

तंसर्वदिव्यरथगेलें ॥ आलांस्वस्तराहुनिउगेलें ॥ चितठेविंरघुनाथिं ॥ १२१ ॥ बैस्येंशिक्कउनितियेशिं ॥ बाहिरभा
लावशिष्टरूपि ॥ यावरिबिभिषणसुग्रिवशिं ॥ निरोपदेतश्रीराम ॥ १२२ ॥ तेदिवशिंपरमसोहका ॥ मेळउनिचं
द्विजमेका ॥ वान्नरांसहिलसककां ॥ भोजनविधिभारंगिलि ॥ १२३ ॥ प्रेमचियागंधाक्षता ॥ लाविसरसि
जोझवपिला ॥ सुमनमाळसुगंधतत्वता ॥ अर्पिनादरेंसमस्तंशिं ॥ १२४ ॥ चैतन्यपरिमळद्रव्येबहुत ॥ स
बांशित्वचिंलेंशेभिवंत ॥ आरत्याधुपदिपयथा ॥ कर्तनिभोजनावैसले ॥ १२५ ॥ श्रीरामश्रीचेदिव्यान्ना ॥
त्यासुवास्यालग्निवेधोन ॥ वसंतकरिप्रहस्युणा ॥ इतिभोजननेधिचें ॥ १२६ ॥ त्याजन्नात्वासुवासबहुत ॥
विमानिभमराशिभावंतुजाल ॥ विबुध्यलाकयेति ॥ समस्त ॥ श्रीरामपत्तिरिजेबावया ॥ १२७ ॥ वैसावया
सुवर्णपिठे ॥ मांडिलेंदिव्यरत्नचित्तां ॥ जडिलजडणियांचेंप्रघटे ॥ दिव्यतेजचहुकडे ॥ १२८ ॥ सुगंधजडके
मरोनियां ॥ जवळिठेविन्याजडिलस सरिया ॥ पात्राप्रतिशेम्तलिसमया ॥ लाउनियांरत्नहिपा ॥ १२९ ॥ प्रथ
मविश्वासपूर्ण ॥ तेंचिभविवाठिलेंलवण ॥ विरक्तिचिमिरगुंडेजाण ॥ नानासाधनेत्याचशाख ॥ १३० ॥

॥ विजय ॥
॥ ७८ ॥

सत्कर्मवियाकेशिं विरि ॥ वाढिल्यान वविधमत्ति च विरि ॥ निश्चयशक्तिरातया विरि ॥ यशापरिशुद्धिदिसे ॥ ३२ ॥
 निजबोधाचा मातु पूर्ण ॥ अक्षयशांतिचे वरान्न ॥ तेथे नमो देव उक्तरन ॥ नानापरिचे वाढिले ॥ ३३ ॥ पूर्णप्रसि
 चे माउथोर ॥ मुनहूपे वाधिरिया सुकुमार ॥ ते लवण्यागे पुण्यात्तवार ॥ नेहरहित गोडबहु ॥ ३४ ॥ ससधुता
 तंतकुन ॥ गुढवरिया नंतरि पूर्ण ॥ क्षमाफेणिया गोडपूर्ण ॥ समसमान सवींशि ॥ ३५ ॥ विवेकपाप उचांगले ॥
 वैराग्यजिह्वी विरि माजिले ॥ विज्ञानतेचि वामत फेळी ॥ ठिठिके के सत्वचि ॥ ३६ ॥ सर्वश्रुतिसमता चोख
 डि ॥ तेचि मग मगल वाढिले कडि ॥ सज्जनजन जगती गेडि ॥ वेदांतशास्त्रवृत्तेजे ॥ ३७ ॥ मुरव्यगुन हूपेचे
 त ॥ त्या विषयान्ते विरस समस्त ॥ प्रेमके करी नि सदा सत ॥ शुद्ध करि जन्ताले ॥ ३८ ॥ जेवणार वेसले स
 क ॥ स्वानंद जळे पात्रे प्रोक्षित ॥ देहबुद्धिचा चित्रा वळिलेय ॥ पात्राबोहर घालला ॥ ३९ ॥ सोहंगा इति जपोन ॥
 देहबुद्धि जावे सोडिले पाणि ॥ निरुति जापोषण घेउनि ॥ रामस्मरणे गजेलि ॥ ४० ॥ पंचप्राणाच्या प्राणहृति
 योगाभ्यासनाधिकरिति ॥ शिरेवेचि मग ग्रंथि ॥ सत्वरसेडिले निज हस्ते ॥ ४१ ॥ निराभिमान सपुण ॥ ४२ ॥

(१)
श्रीराम॥
१८॥

हंचकेलेंकरह्याळण॥ नेत्रालविलेजिवन॥ जगज्जिवनसर्वदिस॥ १४१॥ श्रीरामभक्तक्षुधाक्रांत॥ स्वादुधेमुनिजे
वित॥ पद्मासनघालुनिनिश्चित॥ यासुधेलियासामागे॥ १४२॥ भवरोगेजेवेष्टित॥ नाहिबावडिप्राप्तुधेदांत॥
लेरकमकाउगेविपाहत॥ यासयेकनधेवेचि॥ १४३॥ चंद्रोर्द्धद्रवेसामकाल॥ इतरयाषाणकोरडेसमस्त॥ तें
सरामपत्तिजेजेविलेभक्त॥ अमाग्याप्राप्तकैचेंत॥ १४४॥ जेदेवसंपतिनेसमाग्यहेति॥ तेचिराघवपत्तिरिजे
विले॥ तूमिचेठेकरदेति॥ अहानंदेंकरेनिया॥ १४५॥ तेचिमुवनपतिचिराणि॥ वाढिजानकिजगत्रजननि॥
तेथेंन्युन्यपदार्थकोणि॥ कदाकळिअसेना॥ १४६॥ स्वामुखजळेशेउन॥ कर्मबंधाचेउतरजापोषण॥ उठिले
सकटाकुन॥ आचवलेपुर्णसौंसारा॥ १४७॥ अमानिवमहाप्रभु॥ हेचिविडेचेतिसमस्त॥ निजधननाममु
द्रांकित॥ दक्षणादेतयाचकांशि॥ १४८॥ भक्तिचिरुपपावस्त्र॥ भक्तांशिदिधलिराजिवनेत्र॥ तेसोह
कावर्णावावळे॥ सरस्त्रवत्कारिशक्तिनळे॥ १४९॥ जैसेस्वपत्तिरिबैसउन॥ दिधलेसकळारिभोजन॥
मगसमामंडपारिआणुन॥ रघुनंदनगौरवितया॥ १५०॥ मुगुटकुंडलेसर्वभक्तकार॥ आपणस्वये

॥विजय॥
१८॥

देतरघुविरा। तैचईतरवाब्बर। गौरविले रघुनाथे॥५२॥ विमिषणसुग्रिवजंखुवंत॥ यांच्यासेनाज्यास
 मस्त॥ सिलुक्क्यहि गौरविरिताकांत॥ वस्त्रेखळंकारदेउनियां॥५३॥ दोनशिंकासनेंदोनछत्रे॥ विमि
 षणसुग्रिवारिराजिनेत्रे॥ दिधलिकितेकजमोळमवस्त्रे॥ नानावस्त्रुजपार॥५४॥ पुढेउभाजसेतोहनु
 मंत॥ त्याकडेनपाहेरघुनाथ॥ वाब्बरयाहलितटस्त॥ विपरितार्थदेरवेनियां॥५५॥ कांनपाहेरघुनंदन॥
 तरिहनुमंताजैसेनिधान॥ हेब्रह्माडवोवकुव॥ जयावरनटाकावे॥५६॥ आचाउपकारशिखपार॥ मे
 रपरिसजालामार॥ त्याशिवावयखळंकार॥ दिधलिकितेकरेना॥५७॥ मगउठेनियांरघुपति॥ हृदई
 द्रढधरिलामारति॥ ह्मणेलुप्तियाअंतरिनिम्बि॥ विमिचसर्वदांराहेन॥५८॥ लुजवेगकायेकक्षणा॥ जिव
 ल्गामिनकेजाण॥ हनुमंतद्रढधरिलेचरण॥ ह्मणेलुचमजईज॥५९॥ शिलेनेवस्त्रेखळंकार॥ देउनि
 गौरविलावाब्बर॥ परिजापुन्यागकांचाहार॥ हनुमंतालगिदिधला॥६०॥ पृथ्विचेमोलसंपुर्ण॥ येक
 येकमणितोजाण॥ तोहारज्यानकिनेनेउना॥ गळांघालिलामारतिचा॥६१॥ हनुमंतताळाळउडाला॥

(10)

श्रीराम॥
॥३॥

दृष्टावरिसमोरबैसला॥ येकयेकमणिफेडिला॥ दोठरवालेंघालेनियां॥ ॥३२॥ जोतोमणिफेडुन॥ ह्मणे
आंतनाहिरधुनंदन॥ ह्मणेनिहेलमिरकउन॥ व्यर्थपाषाणकायेह॥ ॥३३॥ बोलतिसुग्रिवांदिवान्नर॥ व्यर्थ
फेडिलदिव्यहार॥ मारतिलोणेरधुविरा॥ अंतरींगानेदिसेना॥ ॥३४॥ वान्नरह्मणतितुसेहदई॥ रामदास्व
वियेसमई॥ असेंबोलतांचिलवलाहि॥ मगकायेकलेंहनुमंते॥ ॥३५॥ हृदयकपाटउघडिलें॥ लौजांतश्री
रामतपसांवळे॥ उदरविदारनदाविलें॥ समस्तदेसिलेंयकदांचि॥ ॥३६॥ जैसासिंकुसुनिरधुनाथ॥ विजया॥
तैसाचमाततिच्याहृदयांत॥ मगवान्नरउठोनसमस्त॥ नमस्कारिलिहनुतारि॥ ॥३७॥ असेअगोष्टे
शिनिरंतर॥ राहिलाजंजनिचाकुमर॥ वरकशिराजलेवान्नर॥ स्वस्थकाशिजावया॥ ॥३८॥ लक्षुम
णप्रथशत्रुघ्न॥ तेहिसुग्रिवबाणिबिमिषण॥ वस्त्राभराणिगोरविलेपुण॥ सदनाबापुत्रानेनुनि
यां॥ ॥३९॥ कौशलेसुमित्रेप्रति॥ सुग्रिवबिमिषणपुसलि॥ ह्मणतिमालाहोबाधावरिप्रति॥ असे
घाविवहुसाल॥ ॥४०॥ कौशलासुमित्राबोलला॥ वारेतुमचेउपकारजगणिला॥ विजईकननिरधुनाथ॥

॥३॥

माझा मजमेटविला ॥ ७१ ॥ अमोक्षेन वंकार देउन ॥ गौरविले दोघे जण ॥ सुग्रीव जाणि विमिषण ॥ कैकै सदन
 चलिले ॥ ७२ ॥ तो आउवाये उनि मरथ ॥ झणेतिकडे न जावें येथार्थ ॥ नेविपरिल बोलतां चित ॥ खेद पावेल तु
 मचें ॥ ७३ ॥ असें मरथें बोलोन ॥ परत विले दोघे जण ॥ रामाजवळि परतोन ॥ सर्वेचिनाले उभयेतां ॥ ७४ ॥
 उमेर हिले जोडुनि कर ॥ सर्वांचे आश्रुविंभरले नेत्र ॥ झणति राघवा निरंतर ॥ सर्वथा आश्रान विसरावे ॥ ७५ ॥
 त्रिभुवनिचे राजा कावे ॥ रामाजवळि चवसावे ॥ परिते प्राप्ति न नाहिं बरे वें ॥ वोढुनि नेत बळेचि ॥ ७६ ॥
 काय आठवावे उपकार ॥ जन्मे जन्मीन पडे विसर ॥ तुसें गोड बोलनें निरंतर ॥ राघवाहर्दई आठवले ॥ ७७ ॥
 सुंदर सुंदर दोघे जण ॥ बोललि सुग्रीव विमिषण ॥ मग लगे रघुनंदन ॥ सुमने हर्दई वसे मित्र ॥ ७८ ॥ मग
 उठोनियां रघुनाथ ॥ दोघांचे मस्तकिले विलाहस्त ॥ मग लेहि सव्य घालुनि रघुनाथ ॥ निघते जाले ते काळ ॥ ७९ ॥
 त्यांस बोकवित रघुविरा ॥ जाल अयोध्या बाहेर ॥ मग सर्व वाळारिं न मस्कार ॥ रघुनाथ सिंघाले ॥ ८० ॥ वि
 मिषण सुग्रीव जाबुवंत ॥ नळनि कशर मदि स मस्त ॥ इह साष्टांग न मुनि रघुनाथ ॥ जाले जाले ते काळ ॥ ८१ ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ १९० ॥

दृष्टापथं चैवालिलेत्वरित ॥ मायुतिराधवाकेऽपाहृत ॥ तेषु निनमस्कारधालित ॥ सगद्दचितिंहोउनियां
॥ १८२ ॥ मगपवनवेगं कृतान ॥ कपिअसुरनिघालेतेयुन ॥ किस्किंदेससुर्यनंदन ॥ कपिसमवेतराहिल ॥ १८३ ॥
तेषां विभिषणगौरविल ॥ मगधेउनियाअसुरसेका ॥ रावणानुजालकेसूगेल ॥ स्वस्थराहिलास्वस्था
नि ॥ १८४ ॥ ईकडेअयोध्येशिरधुनाय ॥ बंधुसहितराअकरित ॥ पृथ्विसंपुणआनंदभरित ॥ दुखकिंचितन
सेचि ॥ १८५ ॥ अक्रासहस्रवर्षवैरि ॥ अयोध्यानाथरास्यवैरि ॥ लोकसकळधर्मधिकारि ॥ पापलिकमात्रनसे
चि ॥ १८६ ॥ अवतारहरिबहुलधरि ॥ परिसुरवबहुतराभावतरि ॥ अक्रासहस्रवर्षनिर्धारि ॥ अक्षरैरा
ज्ज्वालविले ॥ १८७ ॥ जगामुत्सुदुखदरिद्र ॥ रासलनाईअनुमात्र ॥ शिलेसहितराजिवनेत्र ॥ ब्रह्मानंद
वर्तलअसे ॥ १८८ ॥ वशिष्टविश्वामित्रअगस्ति ॥ अणिकुरुविजैसंगअस्ति ॥ अयोध्येमजिसदावसेति ॥ ज
नकजापतिसमिप ॥ १८९ ॥ अगस्तिअसुरवैश्रवण ॥ नित्यकरितरधुनंदन ॥ सदांरुसयत्नकजन ॥ राध
वदर्शनघेतांचि ॥ १९० ॥ सुरस्यनामविजयग्रंथ ॥ उत्तरकांडकथाअहुत ॥ राजिवैसल्यारधुनाय ॥ १९१ ॥

॥ विजय ॥
॥ १९० ॥

(118)

धन्यकाव्यार्थरशिशुह ॥ ११९ ॥ रामविजयचें आवर्तन ॥ करि पापचें संकारण ॥ शत्रु पराजयें विसम ॥ पुर्ण
 याच्या श्रवणें होय पै ॥ १२० ॥ अज्ञानाशि होय ज्ञान ॥ निपुत्रिकाशि पुत्रसंतान ॥ भव रोग जाय नित केन ॥
 मावें करि निपरिसतां ॥ १२१ ॥ अयोध्या प्रवेश जाला पुर्ण ॥ पुढें रसाळ कथा गहन ॥ श्रवण करीत पंडित
 लजन ॥ राधे विमनसमर्पुनियां ॥ १२२ ॥ अयोध्या पुरव शिराभिरामा ॥ ब्रह्मानंदा कन्या पाया मा ॥
 श्रीधर वरदा पुर्ण कामा ॥ नामा न नामा तिलें ॥ १२३ ॥ रामविजय ग्रंथ सुंदर ॥ संमत वाल्मिकना
 उकाधार ॥ सदा परे सोतचतुर ॥ निरुक्ति रीति योग्य वयो उहा ॥ १२४ ॥ ० १ ॥ २ १ ॥ ३ १ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com